एड्स संबंधी सूचना में मीडिया की भूमिका

* डॉ. चैना त्रिवेदी

विश्व के साथ–साथ देश का कोई भी राज्य एच.आई.वी. / एड्स संक्रमण से अछूता नहीं रहा है। वर्तमान में विश्व की जनसंख्या 7 बिलियन हैं वही विश्व में 'नेशनल एड्स कंट्रोल आर्गनाईजेशन' के द्वारा 2009 में 33.4 मिलियन लोग एच.आई.वी. / एड्स संक्रमण के साथ जी रहे है तथा विश्व में 2 मिलियन एड्स पीड़ित लोगों की मृत्यु हो चुकी है। एड्स देश के जनस्वास्थ्य की मूलभूत समस्या बन चुका है। वर्तमान की आवश्यकता इस संक्रमण की गति को रोकना तथा संक्रमित व्यक्तियों की उचित देखभाल तथा सहायता करना है।मीडिया के मुख्य कार्यों में सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन हैं मीडिया वर्तमान में प्रभावकारी शक्ति के रूप में उभरा हैं मीडिया का प्रभाव समाज एवं किशोरावस्था के बालकों पर अधिक पड़ा है। और मीडिया द्वारा बताई गई सूचना का हमारे मानस पटल पर गहरा प्रभाव होता है। क्योंकि एड्स बीमारी का इलाज सावधानियां है, दवाई नहीं।

मीडिया के द्वारा एच.आई.वी. / एड्स के प्रति जागरूकता संबंधित कार्यक्रम प्रकाशित और प्रसारित किये जाते है। समाचार पत्रों में नियमित रूप से एच.आई.वी. / एड्स संबंधित विशेष अंक प्रकाशित किये जाते है। रेडियों पर ऐसे कार्यक्रम प्रसारित किये जाते है जिससे समस्त आयु वर्ग को जागरूक किया जा रहा है। ''नार्को'' के अनुसार 2009 भारत में 5.5 मिलियन लोग एच.आई.वी. / एड्स संक्रमण के साथ रह रहे हैं जिनमें 39 प्रतिशत स्त्री, 3.5 बच्चे एच.आई.वी. / एड्स से संक्रमित है तथा मध्यप्रदेश में 30340, इन्दौर में 10933 संक्रमित है। जिसमें 53 प्रतिशत मरीज असुरक्षित यौन संबंध के द्वारा, 23 रोगी संक्रमित खून के द्वारा, 24 रोगी अन्य है। ग्वालियर में 60 संक्रमित मरीज एच.आई.वी. / एड्स के है। जिनकी उम्र 21–30, 31–40 वर्ष है। तथा भोपाल में 409 एच.आई.वी. / एड्स संक्रमित है। टेलीविजन पर भी विभिन्न चैनलों द्वारा एच.आई.वी. / एड्स से संबंधित कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है वहीं रेडियों का महत्व बड़ा है। स्वतंत्रता के पश्चात देश के विकास के प्रति जागरूकता लाने में मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अनसुंधान के उद्देश्य –

एड्स जागरूकता में मीडिया की भूमिका का अध्ययन, जिसके अंतर्गत समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री, टेलीविजन, रेडियो, विज्ञापन के द्वारा एड्स के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है। शोध विधि – इन्दौर शहर का चयन देव निर्देशन प्रणाली द्वारा 500 व्यस्कों पर किया गया है। तथा सांख्यिकीय परिक्षण हेतु काल पीयर्सन का सहसंबंध गुणांक ज्ञात किया है। परिचर्चा विश्लेषण –समाचार पत्र पढ़ना एवं एड्स की जानकारी प्राप्त करने पर 95.2 प्रतिशत व्यस्क समाचार पत्र के माध्यम से एड्स की जानकारी रखते है तथा जागरूकता प्राप्त कर रहे है। पत्रिका पढ़ने संबंधी प्राप्त करने पर 65 प्रतिशत व्यस्क पत्रिकाओं के माध्यम से जागरूकता प्राप्त कर रहे है। नईदुनिया समाचार पत्र इन्दौर म.प्र. 2010 में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार रेड रिबन एक्सप्रेस प्रोजेक्ट में बचाव, उपचार, देखभाल, सहयोग तथा अन्य स्वास्थ्य संबंधी जानकारी को भारत के 80 लाख लोगों तक पहुंचाया, तथा 81,000 जिला स्तर के संसाधनों, व्यक्तियों को एड्स प्रशिक्षित किया गया, 57,000 लोगों को एच.आई.वी. पर सलाह दी गई। साथ ही 36,000 लोगों ने एच.आई.वी. एड्स जांच करवाई।

अतः शोध अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर समाचार पत्र एवं पत्रिका पढ़ने एवं एच.आई.वी. / एड्स के प्रति जानकारी के मध्य धनात्मक (+0.66) स्तर पाया गया है। रेडियो सुनना एवं के प्रति जानकारी प्राप्त करने पर 86.6 प्रतिशत न्यायदर्श रेडियों के माध्यम से तथा प्रतिदिन एड्स की जानकारी सुनने वाले न्यायदर्श 31.2 प्रतिशत साप्ताहिक 17 प्रतिशत मासिक रूप से 2.8 प्रतिशत, कभी–कभी 49 प्रतिशत व्यस्क एड्स की जानकारी रेडियों से प्राप्त करते है।टेलीविजन देखने संबंधी जानकारी में 90 प्रतिशत व्यस्क टेलीविजन से एड्स के बारे में जानकारी प्राप्त करते है। शोध से प्राप्त जानकारी में दूरदर्शन चैनल पर एड्स की अधिक जानकारी देखने व सुनने को मिलती है तथा फिल्म भी देखने में आती है न्यायदर्श का कहना है कि टेलीविजन एच.आई.वी एड्स के प्रति जागरूकता अहम भूमिका रखता है। 90 प्रतिशत व्यस्क एच.आई.वी. एड्स

फैलने की सही जानकारी रखते है जबकि 10 प्रतिशत व्यस्क आज भी एड्स फैलने के सही कारणों से वंचित है।बाह्य विज्ञापनों के द्वारा एड्स की जानकारी ज्ञात करने पर 95.2 प्रतिशत व्यस्क बाह्य विज्ञापनों के द्वारा जागरूकता प्राप्त करते है यह विज्ञापन दिवारों पर, पेम्पलेट, सड़के के किनारे होर्डिग एवं बैनरो द्वारा प्राप्त की जा रही है किन्तु सर्वाधिक जानकारी दिवारों पर लिखे विज्ञापनों से प्राप्त की जा रही है। इस प्रकार रेडियो सुनना एवं एड्स की जानकारी के मध्य कोई सह संबंध नही पाया गया ;-0.62),जबकि टेलिवीजन देखने एवं एड्स की जानकारी के मध्य धनात्मक (+0.25),पाया गया शिक्षा एवं एड्स के प्रति जानकारी के मध्य सीधा संबंध है (+0.74),अर्थात् अध्ययन के दौरान अधिकांश व्यस्क शिक्षित पाये गये परिणामस्वरूप एड्स फैलने के कारणों की जानकारी रखते है। जनगणना 2001, 10 वीं पंचवर्षीय योजना रिपोर्ट के अनुसार साक्षरता की दर 65 प्रतिशत बढ़ाने में 50 वर्ष का समय लगा गौरतलब यह बात है कि 35 प्रतिशत आबादी अब भी निरक्षर है जिस का प्रभाव न सिर्फ आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य पर भी विपरित प्रभाव डालती है वही अशिक्षा कुपोषण केंसर मलेरिया टी.बी., एड्स एच.आई.वी., रक्त अल्पता, नशाखोरी, वैश्यावृत्ति आदि मानसिक, शारीरिक एवं सामाजिक बिमारियों का मुख्य कारण है। राज एक्सप्रेस समाचार पत्र म.प्र. की रिर्पोट के अनुसार 2010 शोधकर्ता पाउला कैनन का कहना है कि यह संकर जीन और स्तंभ कोशिका प्रक्रिया बताती है कि एच.आई.वी. रोधी प्रतिरोधक कोशिकाएं बनाना संभव है और एच.आई.वी. के खिलाफ लड़ाई जीती जा सकती है।

उन्होंने कहा कि अभी यह प्रयोग चुहों पर किया हैं और अब देखना है कि मानव में यह प्रयोग कितना सफल रहता है। आज तक चैनल ए.के शुकदेव के अनुसार 2009 40 मिलियन विश्व में, 30 लाख भारत में एच.आई.वी./एड्स रोगी है एवं आधप्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडू, केरल, नागालैंड अधिकरोगी है। जिसें रोजाना 18000 एच.आई.वी. रोगी होते है तथा 8000 रोगियों की प्रतिदिन मृत्यु होती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव–प्रस्तुत शोध से स्पष्ट होता है कि एच.आई.वी/एड्स आज भयावह जानलेवा संक्रमण के रूप में विश्व में तेजी से फैल रहा है। हमारे देश के साथ–साथ सम्पूर्ण विश्व में एच.आई.वी. संक्रमित तथा एड्स रोगियो की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। विश्व में 33.4 मिलियन लोग एच.आई.वी./एड्स से संक्रमित है तथा भारत में 5.5 मिलियन लोग एच.आई.वी/एड्स से संक्रमित है। भारत में सबसे अधिक एच.आई.वी./एड्स रोगी है। सर्वेक्षणों से पता चलता है कि आधे से अधिक एच.आई.वी./एड्स पीड़ित व्यस्क है, इसलिये समय'समय पर एच.आई.वी./एड्स से संबंधी जानकारी देते रहना चाहिये। इस आयु में अधिकतर बालक रास्ता भटक जाते है इसलिए बालकों को परिवार, महाविद्यालय एवं संचार के अनेको माध्यमों द्वारा जानकारी मिलती रहनी चाहिए। एच.आई.वी./एड्स के प्रति जन–जागरूकता बढ़ रही है। मीडिया जागरूक करने में अहम् भूमिका निभा रहा है।

एच.आई.वी./एड्स जागरूकता में घर की भूमिका

1. अधिकतर माता–पिता यौन के संबंध में अपने बच्चों से बात करने में झिझकते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप बालकों को एच.आई.वी./एड्स की जानकारी नही हो पाती है तथा बालक गलत तरीके से सैक्स की जानकारी प्राप्त करते है एवं अनेक बीमारियों का शिकार होते है। अतः माता–पिता को अपने बालकों को उम्र के अनुसार सैक्स की जानकारी देते रहना आवश्यक है।एच.आई.वी./एड्स जागरूकता में अध्यापक की भूमिका 2. अध्यापक को यौन शिक्षा के साथ नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों को शामिल करना चाहिए, जिसमें नई पीढ़ी एच.आई.वी./एड्स से रहित हो।एच.आई.वी/एड्स जागरूकता में जनसंचार माध्यमों की भूमिका

1. आमजन समाचार पत्र, टेलीविजन, रेडियो, पत्रिकाओं आदि माध्यमों से ज्ञान प्राप्त होता है। अतः बालकों को संचार के माध्यमों की उचित जानकारी अनिवार्य है। 2. यौन संबंधी स्वास्थ्य शिक्षा के महत्व के विषय में जनसंचार माध्यम जागरूकता पैदा करने में प्रमुख भूमिका निभा सकते है। यौन विषयक शिक्षा का संदेश प्रदान करने के लिए बालकों और कम शिक्षित लोगों के लिए बैनरों का प्रयोग किया जा सकता है। 3. एच.आई.वी./एड्स के बारे में बैनर, दीवारों पर लिखना, फिल्मों, पोस्टर चित्रकारी आदि भी लाभदायक हो सकती है।एच.आई.वी./एड्स जागरूकता समुदाय की भूमिका 1. बस, ट्रेन आदि में जाकर लोगों को एच.आई.वी./एड्स के प्रति जागरूक करना चाहिए जिसमें प्रिन्ट मीडिया की मुख्य भुमिका हो सकती है। 2. डॉक्टरों और नर्सो के लिए भी समय–समय प्रशिक्षण की आवश्यकता है ताकि वे एच.आई.वी./ एड्स संक्रमण की जानकारी रोगियों को दे सकें। 3. रक्त या रक्त उत्पाद का शरीर में चढ़ाने जाने से पूर्व परीक्षण किया जाना चाहिए। 4. विवाह पूर्व यौन संबंध न स्थापित करें। विवाहोपरांत अपने जीवन साथी के प्रति विश्वसनीय और आस्थावान रहे।

संदर्भ ग्रंथ

1. उपाध्या ज्योति – ''एड्स नियंत्रण में सामाजिक जागरूकता'' सामाजिक सहयोग 2010, पृष्ठ संख्या – 39
2. नई दुनिया समाचार पत्र इन्दौर मध्य प्रदेश 2010 ''एड्स दिवस पर विभिन्न आयोजन'' दिनांक–2, माह–दिसम्बर, दिन–गुरूवार, पृष्ठ–20
3. नई दुनिया समाचार पत्र इन्दौर मध्य प्रदेश 2010 नहीं हैं एच.आई.वी. जाँच किट'' दिनांक–1, माह–दिसम्बर, दिन–बुधवार, पृष्ठ–1
4. मेरिट ई. हेनरी –शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याणी पब्लिशर्य राजेन्द्र नगर लुधियाना पृष्ठ संख्या – 122–125
5. कोठारी गुलाब – पत्रकारिता जनसंचार और विज्ञापन, राजस्थान पत्रिका केसरगढ़ जवाहरलाल नहेरू मार्ग, जयपुर पृष्ठ संख्या – 110, 151
6. शर्मा कुमुद – विज्ञापन की दुनिया प्रतिभा प्रतिष्ठान, 1661 दखनीराम स्ट्रीट, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली पृष्ठ संख्या – 17,46,55